

शासकीय नागरिक कल्याण
महाविद्यालय नंदिनी नगर
अहिलारा जिला दुर्ग छ.ग.



ई पत्रिका

तरंग

ई पत्रिका समिति

2021_22

डा. अलका मेश्राम

(प्राचार्य एवं संरक्षक)

प्रशांत कुमार कनोजे

(प्रधान संपादक)

संपादक मंडल

श्री पी. एल. वर्मा

श्री एस. के. चतुर्वेदी

श्रीमती रश्मि भेलवा

श्री जी. एस. डडसेना

डा. प्रेमेंद्र उपाध्याय

डॉ दालेश पटेल

सह संपादक

श्रीमती चंद्रिका शर्मा

डा. रामनरेश टंडन

श्री बलराज ताम्रकार

श्री देवेश गजपाल

कुमारी निकिता मिश्रा

विशेष सहयोग

छात्रा संपादक

अजय किशोर शुक्ला

कुमारी विद्या देवांगन

विशेष नोट_ रचनाओं के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है

जनभागीदारी समिति



श्री अमनदीप सिंह

अध्यक्ष

श्रीमती पूर्णिमा अमित दास	सदस्य
श्री राजेश कुमार ठाकुर	सदस्य
श्री केशव राम पटेल	सदस्य
श्री पी एल वर्मा	सदस्य
श्री चंदन यादव	सदस्य
श्री एस के चतुर्वेदी	सदस्य



प्राचार्य की कलम से

शासकीय नागरिक कल्याण महाविद्यालय नंदिनी नगर अहिवारा ग्रामीण क्षेत्र होने के बावजूद यहां के छात्र-छात्राएं रचनात्मक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं यहां पढ़ने वाले छात्र-छात्राएं रचनात्मक प्रतिभा के धनी हैं ई पत्रिका तरंग इसका सशक्त उदाहरण है इस हेतु सभी प्रतिभागी संपादक एवं संपादक मंडल के सदस्य बधाई के पात्र हैं ।

महाविद्यालय पर्यावरण को केंद्र में रखकर कई नवाचार अपनाता रहा है इसलिए ई पत्रिका निकाली जा रही है इसे प्रिंट नहीं करवाया जा रहा है महाविद्यालय परिवार द्वारा यह तय किया गया है कि माह के हर तीसरे शनिवार को महाविद्यालय में कोई भी अपने वाहन से नहीं आएगा इसके स्थान पर साइकल या सार्वजनिक वाहन यातायात साधनों का प्रयोग करेंगे सारा परिसर इस दिन वाहन मुक्त रहता है हमारा महाविद्यालय ऊर्जा बचाओ में भी काफी अग्रसर रहता है

युवाओं को सशक्त करने में उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है किसी भी देश की ऊर्जा वहां की युवाओं में निहित होती है वर्तमान में गुणवत्ता युक्त उच्च शिक्षा की दिशा में महाविद्यालय अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है हमारा महाविद्यालय आने वाले समय में उच्च शिक्षा के लिए प्रकाश स्तंभ साबित होगा एवं नित्य नवीन आयामों को स्पर्श कर आगे बढ़ता जाएगा ।

इसी आशा एवं शुभकामनाओं के साथ

डॉ अलका मेश्राम

शासकीय नागरिक कल्याण महाविद्यालय नंदिनी नगर अहिवारा



संपादक की कलम से

समृद्ध भारत स्वच्छ भारत की कल्पना मात्र आल्हदित कर देने वाली है भारतीय संस्कृति में स्वच्छता के साथ ही समृद्धि जुड़ी हुई है धन की देवी महालक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए हम अपने घर को स्वच्छ रखते हैं किंतु घर के बाहर जो गंदगी दिखती है उससे हम कोई

सरकार नहीं रखते स्वच्छता रखने से ही सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार होगा यदि हम अपने आसपास कार्यस्थल पर सफाई रखें पर्यावरण शुद्धि हेतु वृक्षारोपण करें शुद्ध पेयजल की व्यवस्था करें तो रोगों से बचे रहेंगे तथा वह पैसा जो रोगों के इलाज में खर्च होता है वह भी बचेगा इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए दृढ़ संकल्प एवं इच्छाशक्ति की आवश्यकता है ।

स्वच्छता अभियान हेतु सिर्फ सरकार पर निर्भर न रहकर व्यक्तिगत प्रयास आवश्यक है स्कूल कॉलेज आंगनबाड़ी इत्यादि में जागरूकता बढ़ाकर इस कार्य को अंजाम तक पहुंचाया जा सकता है स्वच्छता के इस महान यज्ञ में आहुति देने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ होना होगा ।

बाहरी स्वच्छता के साथ ही आंतरिक स्वच्छता अर्थात् तन व अंतर्मन तथा आचरण की भी शुद्धि होनी चाहिए महिलाओं एवं बुजुर्गों के प्रति सम्मान की भावना हो घर पर लिंग आधारित भेदभाव ना हो तथा बेटे बेटों की समान दर्जा दिया जाय । अमर्यादित आचरण नशाखोरी तथा अपशब्दों के प्रयोग से दूर रहकर छात्र शक्ति राष्ट्र के नवनिर्माण में सकारात्मक रूप से सहायक होगी।

महाविद्यालय की ई पत्रिका तरंग छात्र-छात्राओं की अनगढ़ कृतियों को एक अवसर उपलब्ध करवाती है जिसमें वे अपनी भावनाएं व्यक्त करते हैं इस ई पत्रिका में काव्यकाश, महापुरुषों के जीवन के प्रेरक

प्रसंग, कहानी, ऊर्जावान लेख सभी कुछ समाहित है ई पत्रिका तरंग का यह पहला अंक अपलोड करते हुए हम अत्यंत प्रसन्न है ।

प्रशांत कुमार कनोजे

संपादक ई पत्रिका तरंग सहायक प्राध्यापक (प्राणी शास्त्र)

**“ A Man is but the product of his thoughts
What he think he became ”**

----- Mahatma Gandhi



छात्रा संपादक की कलम से

जीवन में कुछ पल ऐसे आते हैं जो स्वयं को आत्म गौरव और आत्मविश्वास से परिपूर्ण कर देते हैं ऐसा ही पल तब आया जब मेरा चयन महाविद्यालय की ई पत्रिका तरंग के छात्रा संपादक के रूप में हुआ और आज जब मैं यहां अंतिम वर्ष की छात्रा हूं तब तो यह गौरव और भी बढ़ जाता है ।

महाविद्यालय के विद्वान प्राध्यापकों के मार्गदर्शन में एक संपादक के रूप में कार्य करना मुझे सदैव ही लालायित करता था इसके लिए मैंने पूरे मन से समर्पित होकर प्रयास भी किया ।

शासकीय नागरिक कल्याण महाविद्यालय से जुड़ी मेरी स्मृतियां सदैव अविस्मरणीय रहेगी इस महाविद्यालय के गणमान्य प्राध्यापकों से ज्ञान पाना मार्गदर्शन लेना मेरी जिंदगी के अनमोल पल रहेंगे इस वर्ष स्नातक स्तर पूर्ण कर लेने के बाद मैं किस प्रकार अपनी पलकें भिगो इस महाविद्यालय से दामन छुड़ा सकूंगी मैं नहीं जानती परंतु मेरे जीवन का यह दौर सबसे बेहतरीन दौर में से एक है मैं यह जानती हूं यह महाविद्यालय पूरे देश में अपना नाम रोशन करें पूरे भारत देश में अपनी कीर्ति बिखेरे ऐसी मेरी शुभकामनाएं हैं ।

कु. विद्या देवांगन

बीएससी अंतिम वर्ष (बायो)

अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो

तो सूरज की तरह जलना सीखो ।

--- डा . ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

छत्तीसगढ़ का राजगीत

अरपा पैरी के धार, महानदी हे अपार
इंदरावती हा पखारय तोर पईयां
महं पांवे परंव तोर भुँइया
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मईया

सोहय बिंदिया सहीं, घाट डोंगरी पहार
चंदा सुरुज बनय तोर नैना
सोनहा धाने के अंग, लुगरा हरियर हे रंग
तोर बोली हावय सुग्घर मैना
अंचरा तोर डोलावय पुरवईया
महं पांवे परंव तोर भुँइया
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मईया

रयगढ़ हावय सुग्घर, तोरे मउरे मुकुट
सरगुजा अउ बिलासपुर हे बइहां
रयपुर कनिहा सही, घाते सुग्घर फबय
दुरूग बस्तर सोहय पैजनियाँ
नांदगांव नवा करधनियाँ
महं पांवे परंव तोर भुँइया
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मईया



- डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा

प्रणाम गुरुवर

अज्ञानी मन का गुरु ने ज्ञान से नाता जोड़ दिया

गुरु ने मेरे जीवन को एक नया मोड़ दिया

चलते अपनी राह में कई कठिन घड़ियां आईं

उजाला देने उन क्षणों में गुरु की बातें याद आईं

गुरु बिन कहां मुझे और मंजिल का ज्ञान होता

गुरु नहीं होता तो आज कौन संसार में विद्वान होता

गुरुवर तुम्हें लाखों प्रणाम

सोनिया साहू ,

बीएससी भाग दो (बायो)

शिक्षा वास्तविक अर्थों में सत्य की खोज है।

यह ज्ञान और प्रकाश की अंतिम यात्रा हैं ।

----- डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

छत्तीसगढ़ का नामकरण

इस प्रदेश का नाम छत्तीसगढ़ क्यों पड़ा इस विषय पर विद्वान एकमत नहीं है अनुमान है कि सन 1493 के आसपास इसका नाम छत्तीसगढ़ पड़ा परंतु यह मात्र अनुमान है इतिहासकार कनिंघम का यह विश्वास था कि महाकौशल ही छत्तीसगढ़ कहलाता था महाकौशल में चेदिशवंशीय राजाओं का राज्य था । उनका विश्वास था कि चेदिशवंशीय ही बिगड़ते बिगड़ते छत्तीसगढ़ हो गया यह मात्र विश्वास ही था इतिहासकार टालेमी कहते हैं कि इस प्रदेश में 36 किले थे संभवत इस संख्या में घट बढ़ भी रही हो किंतु प्रधानता 36 गढ़ों की ही थी इन्हीं किलों के नाम पर इस प्रदेश का नाम छत्तीसगढ़ पड़ गया यह 36 किले शिवनाथ नदी के उत्तर और दक्षिण में स्थित थे ।

(पुस्तक माटी बोलती है स्व. मेघनाथ कनोजे से साभार)

शिक्षा जिंदगी की तैयारी नहीं है

शिक्षा खुद जिंदगी है ।

----- **जॉन डेव**

मेरा भारत महान
जिसकी संस्कृति विश्व में पूजी जाए
जिसके कण-कण में देव समाय
जिसको दुनिया विश्व गुरु बुलाए
ऐसा मेरा देश भारत कहलाए ।

जहां सूरज उगने पर दुनिया रोशन हो जाए
जिसकी मिट्टी सभी और खुशबू फैलाएं
हवा हर पल जीने का एहसास कराएं
ऐसा मेरा देश भारत कहलाए ।

कलश यादव , बीएससी भाग एक

नैतिक शिक्षा का महत्व



नैतिक गुणों का विकास बाल्यावस्था से ही होना चाहिए नैतिक शिक्षा के बिना मानो व्यक्ति अधूरा है क्योंकि यदि नैतिक शिक्षा नहीं है तो व्यक्ति कितना भी ज्ञानी हो वह कभी भी अपने राष्ट्र का, दूसरों का, अपने सम्मान का, भला नहीं कर सकता परोपकार विनम्रता इमानदारी शिष्टाचार आज्ञा पालन इन नैतिक गुणों से तो व्यक्ति सुशोभित होता है नैतिक शिक्षा से आशय व्यक्ति के उन गुणों से है जो उसके व्यक्तित्व को प्रतिभाशाली बनाकर उसे समाज का एक उपयोगी अंग बनाते हैं और दूसरा एक ऐसी मानसिक स्थिति के निर्माण से है जो केवल दूसरे के हित में अपना कल्याण समझता है ।

एक पत्थर चरित्रहीन व्यक्ति की गरिमा होती है नैतिकता को धारण कर व्यक्ति अपनों पर अपने परिवार समाज वह अपने राष्ट्र का कल्याण कर सकता है नैतिक शिक्षा व्यक्ति में ऐसे संस्कार उत्पन्न करती है की अनेक कठिनाइयां आने पर भी मनुष्य कर्तव्य पथ पर विचलित नहीं होता व्यक्ति में ज्ञान कितना ही हो नैतिकता सतचरित्र के बिना उसका कोई महत्व नहीं होता ।

घनश्याम सिंह डडसेना (सहायक प्राध्यापक गणित)

Benefits Of Sports

Human body is like a complex and delicate machine , which comprises trillions of cells .A slight malfunctioning of one part leads to breakdown of the machine . In similar way if such a situation arises in human body it also leads to malfunctioning of the body . Sports can play a significant role in keeping the society, community and nation wealthy . If you are doing some sort of sports or physical activity regularly so that muscles and other systems of our body avoid health related problems and diseases .

Taking part in sports can help us feel fitter ,healthier and mentally strong and that is just the start of it keeping in mind the many benefits below .

1 Sports and exercise trigger chemical and hormones like melatonin and serotonin in the brain that can make you feel happier and relax you can get sound sleep .

2 Your heart is a muscle and needs frequent exercise to help it keep fit and healthy . A healthy heart can pump blood efficiently around your body .Stronger hearts can improve overall health of the body .

3 Sports brings together a mixture of people from different communities, background, religions and beliefs .Sports can offer a new way to meet others that you may not interact with day to day . As a result you can make new friends .

4 Regular sports causes more oxygen to be drawn into body with carbon dioxide and waste gases expelled . This increases the lung capacity during sports ,improving lung function and efficiency .

5 Sports increased your confidence level .

6 When you playe daily sports or physically active your mind gets a chance to unplug from daily stresses and strains of life .

7 Regular participation in sports and being active can also promote good mental health . This includes improving your mood, reducing anxiety, combating negative emotions and protecting against depression .

8 Sports teach teamwork and problem solving skills.

9 Healthy development of children from an early age . Health is wealth and when its comes to our children we don't compromise a bit . The best and easiest way to ensure a healthy upbringing both mentally and physically for children is to get them involved in sports .

10 Sports brings leaders .

So play sports and gets above benefits .

Prashant Kanoje (Sports IN charge)

**कठिन समय तुम्हारी श्रेष्ठताओ को उभरता है
सुखदाई समय दुनिया की श्रेष्ठता तुम तक लाती है
जीवन दोनों का मिश्रण है**



युवा शक्ति

नव जागृति फैलाओ

अपने फौलादी हाथों से

एक नया इतिहास बनाओ

जाती पाती तोड़कर

ऊंच-नीच छोड़कर

एकता का पाठ पढ़ाओ

कल के कर्णधार तुम

नाविक पतवार तुम

नव ज्योति जगाओ

हे युवा शक्ति एक नया संसार बसाओ

श्रीमती चंद्रिका शर्मा (सहायक प्राध्यापक हिंदी)



शिक्षा व्यक्तित्व का बहुआयामी विकास



परीक्षा में अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण होना शिक्षा का एक महत्वपूर्ण भाग तो है पर वह अपने आप में समस्त शिक्षा का सार नहीं शिक्षा वस्तुतः व्यक्तित्व के बहुआयामी विकास का नाम है वह आत्म जागृति का एक पर्याय है शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी भविष्य में आने वाली चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए अभी से तैयारी करते हैं यह तैयारी जितनी होती है उसी अनुपात में विद्यार्थियों का भविष्य की उज्ज्वल होता है आज शिक्षक और विद्यार्थियों के मध्य प्रेम और सौहार्द पूर्ण वातावरण से उच्च शिक्षा अपनी ऊंचाइयों पर जा सकेगी। वसुधा शिक्षा उपाधियों द्वारा नहीं शिक्षक तथा विद्यार्थियों के आचरण द्वारा व्यक्त होनी चाहिए तभी वह सार्थक कही जा सकती है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए उच्च शिक्षा एक महत्वपूर्ण रोल अदा करती है जिसमें विद्यार्थियों के शिक्षक की जीवन और जीवन जीने की कला को प्रबल बनाती है एवं अपने वह अपनों को संबल प्रदान करने हेतु और लोगों के भलाई के लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण रोल होता है एक शिक्षित व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का बहुआयामी विकास कहीं भी किसी भी जगह कर सकता है।

श्री पुरुषोत्तम लाल वर्मा, सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)

“You cannot believe in God

Until you believe in yourself “

----- Swami Vivekananda

प्रसन्नता की उपलब्धि सद्विचार से



जीवन में बालक से लेकर बूढ़े तक सभी प्रसन्नता चाहते हैं और उसे पाने का प्रयत्न करते रहते हैं ऐसा करना भी चाहिए क्योंकि स्थाई प्रसन्नता जीवन का चरम लक्ष्य भी है यदि मनुष्य जीवन में प्रसन्नता का नितांत अभाव हो जाए तो उसका कुछ समय चल सपना भी असंभव समझना चाहिए ।

यह यह बात सत्य है की मानव जीवन में दुख क्लेश का अनुपात ही अधिक देखने में आता है तब भी लोग शोक से जी रहे हैं इसका कारण यही है कि बीच-बीच में उन्हें प्रसन्नता भी होती रहती है और उसके लिए उन्हें नित्य नई आशा भी बंधी रहती है प्रसन्नता जीवन के लिए

संजीवनी तत्व है मनुष्य को उसे प्राप्त करना चाहिए प्रसन्नता में ही मनुष्य अपना तथा समाज का कुछ भला कर सकता है ।

वास्तविक प्रसन्नता का मूल रहस्य दूसरों की प्रसन्नता में निहित है जो परोपकारी व्यक्ति दूसरों के सुख के लिए जीते हैं उनके कार्य औरों की सेवा रूप होते हैं वे अपने जीवन में साधन सुन्य रहने पर भी प्रसन्न संतुष्ट एवं सुखी रहते हैं जिसको जीवन में वास्तविक प्रसन्नता की जिज्ञासा हो वह अपने जीवन को यज्ञमय बनाएं नित्य निरंतर दूसरों का हित साधन करें जिससे वह अपनी वांछित वस्तु प्रसन्नता को नित्य निरंतर पाता रहे ।

श्री सत्येंद्र चतुर्वेदी सहायक अध्यापक (रसायन)

आप जैसे विचार करेंगे जैसे ही बनेंगे

निर्बल और सबल आप खुद अपने

आप द्वारा बनते हैं।

योग का शारीरिक एवं मानसिक महत्व



वर्तमान युग में योग का बहुत ही गहरा महत्व होता है योग का विषय बड़ा गहरा है किंतु जिस तरह डॉक्टर विभिन्न अवस्था के रोगियों को एक ही दवा की मात्रा उम्र के अनुसार घटा बड़ा कर देता है उसी प्रकार योग विद्या ज्ञान और उसका व्यवहार व्यक्ति की योग्यता अनुसार अलग-अलग बताया जाता है संपूर्ण योग साधना के लिए संपूर्ण जीवन समर्पित करने की आवश्यकता है किंतु शारीरिक स्वास्थ्य स्पर्धी मन की प्रसन्नता और व्यवहार जगत में सफलता पाने के लिए योग को अपनाना आवश्यक है चाहे वह महिला हो या पुरुष ।

योग का आज देश में और विदेश में काफी प्रचार होने का यह कारण है कि उत्तम स्वास्थ्य एवं निरोगी ता के लिए इसकी उपयोगिता सिद्ध हो चुकी है डॉक्टरी परीक्षण के द्वारा भी इनके स्वभाव को जाना जा चुका है पहले यह विद्या योगियों की संपत्ति थी किंतु अब अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रत्येक व्यक्ति इसका अभ्यास कर सकता है लोगों में पहले इस प्रकार की धारणा थी कि योगासन गृहस्थ को नहीं करना

चाहिए क्योंकि इससे नुकसान पहुंचता है पर शोधों से यह धारणा भ्रम पूर्ण सिद्ध हो चुकी है ।

योग द्वारा शरीर से प्राण, प्राण से मन, मन से चित् पर नियंत्रण होता है

चित के द्वारा फिर आत्मा का ज्ञान होता है योग करना एक प्रकार का निवेश करना है यह स्वास्थ्य बीमा कंपनी का प्रीमियम है आपको सुंदर स्वास्थ्य की गारंटी मिलेगी आपके डॉक्टरों की फीस और दवाइयों के दाम बचेंगे हम प्रतिदिन बहुत से अनुभवों और प्रभाव को अपने चित् के द्वारा अपने मन में बैठा लेते हैं और मन हमारा मलिन हो जाता है इसका प्रभाव शरीर पर पड़ता है और शरीर रोग ग्रस्त होता है ।

अतः इस योग मार्ग को अपनाकर कुछ महीनों वर्षों हम अपने मन को साफ शुद्ध कर सकते हैं यह बातें शास्त्री नहीं वरन व्यवहारिक है अनुभव सिद्ध है अस्तु आप अपने जीवन को योगमय बनाने की चेष्टा करें योगमय जीवन की ओर कदम बढ़ाए तथा शारीरिक एवं मानसिक शांति प्राप्त करें ।

डॉ पी.के.उपाध्याय सहायक प्राध्यापक (भौतिकी)



औषधि पौधे

प्राचीन काल से मनुष्य विभिन्न रोगों के उपचार के लिए अलग-अलग प्रकार के पौधों का उपयोग करता रहा है ऐसे पौधे जो मनुष्यों या जानवरों के रोगों में उपचार के लिए उपयोग होते हैं औषधि पौधे कहलाते हैं यह पौधे जंगली या कल्टीवेटेड हो सकते हैं पौधों के विभिन्न भाग जैसे जड़ तना पत्ती फूल फल या बीज आदि रोगों के उपचार में उपयोगी होते हैं पौधों में औषधि गुण उसमें उपस्थित कुछ रासायनिक पदार्थों के कारण होता है इन रासायनिक पदार्थों का मानव शरीर की क्रियाओं पर विशिष्ट प्रभाव पड़ता है ।

प्रकृति ने सभी पौधों को कुछ अलग अलग गुण दिए हैं एवं सभी में औषधीय गुणों के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के विटामिंस एवं मिनेरल्स पाए जाते हैं यदि हम दैनिक जीवन में भोजन में आवश्यक पोषक पदार्थों का सेवन करें तो हमारे शरीर के बाहरी व आंतरिक बीमारियों के हमलों से लड़ने एक प्रतिरक्षा प्रणाली बन जाती है जो हमें स्वस्थ रखती है ।

भारतीय भोजन में बहुत से मसालों का उपयोग होता है जैसे अदरक लहसुन प्याज हल्दी विभिन्न प्रकार के गरम मसाले आदि जो कि हमें स्वाद के साथ-साथ स्वस्थ भी बनाते हैं हमारे घरों में तुलसी का पौधा भी अवश्य होता है जो कि मौसमी सर्दी बुखार गले की खराश आदि के साथ-साथ उसमें उपस्थित बीटा कैरोटिन के कारण आंखों की रोशनी बढ़ाने में भी उपयोगी है।

तुलसी को औषधि पौधों की रानी एवं एलोवेरा को औषधि पौधों का राजा कहा जाता है क्योंकि एलोवेरा भी त्वचा रोगों कब्जो बाल से जुड़ी समस्याओं को दूर करने में मदद करता है बहुत सारे पौधों को हम अपने घर की बगिया में लगाकर भी लाभ प्राप्त कर सकते हैं करी पत्ता, गिलोय लहसुन अदरक हल्दी जैसे पुदीना, धनिया, मेथी, सौंफ, सदाबहार पत्थरचट्टा एलोवेरा, लेमन ग्रास आदि एवं छोटी-छोटी बीमारियों में इनका उपयोग कर स्वास्थ्य लाभ ले सकते हैं ।

श्रीमती रश्मि बेलवा सहायक प्राध्यापक (वनस्पति शास्त्र)

The Root of Education are bitter

But the fruit is Sweet .

---- Aristotle



सामाजिक एकता

व्यक्तियों के सार्थक समूह को ही समाज कहा जाता है समाज में समरसता और एकता स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के उसके अधिकार और कर्तव्य दिए जाएं दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश में बहुत पुराने समय से विभिन्न मनुष्यों के बीच भेदभाव बरता जाता रहा है जाति पात ऊंच नीच और छुआछूत की अवैज्ञानिक और झूठी भावनाएं घर कर गई थी वस्तुतः यह निहित स्वार्थ की उपज थी ।

किसी को जन्म से ऊंचा या नीचा कहना न केवल अवैज्ञानिक है बल्कि मूर्खतापूर्ण भी है। ईश्वर के लिए सभी मनुष्य बराबर हैं जाति पाती ऊंच-नीच आदि के भेदभाव सर्वथा अवैज्ञानिक है । जन्म से जो बड़े होते हैं वह खजूर के पेड़ के समान होते हैं इसलिए संत कबीर ने कहा है

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर
पंथी को छाया नहीं फल लागे अति दूर

डॉ रामनरेश टंडन सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)

मोह एक बंधन है

कम बोलना एक अच्छी आदत है

घमंड पतन का लक्षण है।



Don't Worry Be Happy

Don't worry be happy , take out all the worries from your mind because one who lives with worry invites death in hurry .So always be happy . Naturally one who smiles get dimples and one who gets worries gets

wrinkles worry makes you tense and affects the nervous system where as laughing and being happy will keep the whole body fit .

Life is like a cycle it is not moving it falls . A smile creates happiness it cost nothing but gives a lot . It enriches those who recive without making the people poorer who gives . The happiest people are the busiest people with the least spare time . Even if you are ill and unhealthy , keep smiling and try to spread happiness around you .

Happiness is a state of mind we must live and enjoy every minutes every second of life .

Dr. D. Patel , Assistant Professor (English)



राजनीति विज्ञान की वर्तमान में प्रासंगिकता

राजनीति विज्ञान एक अत्यंत प्राचीन व बहुआयामी विषय है यह अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय परिपेक्ष में राजनीति के आधारभूत संरचनाओं सिद्धांतों व राजनीतिक मूल्य व अवधारणाओं का व्यवस्थित क्रम बंद व

वैज्ञानिक अध्ययन करता है इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय परिपेक्ष में बदलते राजनीतिक धारणाओं उसके विविध पहलुओं कारकों व भावी सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण भी करता है ।

द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत नव स्वतंत्र राष्ट्र का उदय व उनके बढ़ते सहयोग व सामान्य तथा उदारीकरण और भूमंडलीकरण जैसे नए अवधारणा से राजनीति विज्ञान का विषय वस्तु कार्य क्षेत्र का दायरा बहुत विस्तृत व व्यापक हो गया राजनीति विज्ञान का लक्ष्य सदैव “ वसुधैव कुटुंबकम “ सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय के साथ-साथ वैश्विक शांति व मानव कल्याण की स्थापना रहा है। इसलिए यह सदैव स्थानीय स्तर से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर में लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना शासन व प्रशासन लोक सहभागिता बढ़ाने जवाबदेही व सुशासन पारदर्शिता लाने व समाज में समानता स्वतंत्रता मानवता व बंधुता व समानता धार्मिक न्याय दिलाने हेतु पूरी प्रतिष्ठा व समर्पण भाव से सदैव तत्पर रहा है।

वर्तमान में यह वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण व जलवायु परिवर्तन ग्लोबल वार्मिंग वैश्विक आतंकवाद मानवाधिकार के साथ साथ सतत व समावेशी विकास जैसे ज्वलंत मुद्दों पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वैश्विक सम्मेलनों व संगठन के माध्यम से वैश्विक सामंजस व समन्वय स्थापित कर सामूहिक कार्य

योजना बनाने का प्रयत्नशील है जो वर्तमान में इसकी स्थानीय स्तर से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक प्रासंगिकता को इंगित करता है ।

श्री बलराज ताम्रकार सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)



अनेकता में एकता

संसार में विभिन्नता तो रहेगी परंतु यदि विवेक हो तो उस विभिन्नता में भी एकता स्थापित हो सकती है इसलिए शब्दों और किताबों के पीछे न पडकर उस प्रेम को हृदय से जागृत करने का समय है जिससे अनेकता में एकता स्थापित होती है ।

एक बार जब विवेक उत्पन्न हो जाता है तब पूरा संसार ईश्वर मय दिखाई देता है फिर कौन अपना और कौन पराया अनेकता में एकता स्थापित करने के लिए अपने हृदय में शालीनता, उदारता, नम्रता और समानता को स्थान देना चाहिए और आलोचना से डरना नहीं चाहिए बल्कि आलोचना का स्वागत करना चाहिए । जब विवेक जागृत होता है

तब बुराई बाहर नहीं अपने भीतर ही दिखाई देती है इसलिए संत कबीर ने कहा है _

बुरा जो देखन में गया बुरा न मिलिया कोय

जो दिल खोजा आपना मुझसे बुरा न कोय

श्री अजय शुक्ला प्रयोगशाला तकनीशियन प्राणी शास्त्र

“हमारे जीवन में आधी गलतियां इसलिए होती है
कि जहां हमें सोचना चाहिए वहां हम भावुक होते हैं
और जहां हमें भावुक होना चाहिए वहां हम सोचते हैं
“

— अज्ञात



वाणिज्य शिक्षा से भविष्य निर्माण

वाणिज्य की शिक्षा न केवल भविष्य का निर्माण करती है बल्कि कई पीढ़ियों को बना सकती है क्योंकि प्राचीन समय से ही व्यापार और उद्योग का हमारे देश में प्रचलन रहा है व्यापार के संचालन में पूंजीपतियों का एकाधिकार कहे तो अतिशयोक्ति नहीं होगी

वर्तमान बदलते परिवेश में वाणिज्य की शिक्षा से रोजगार के नवीन अवसरों का उद्भव हुआ इससे सामाजिक वातावरण को एक नई दिशा मिली जब हम वाणिज्य के क्षेत्र में रोजगार की बात करते हैं तो इसमें स्वरोजगार व सेवा क्षेत्र दोनों शामिल होते हैं इसमें कंप्यूटर, एकाउंटिंग, इनकम टैक्स सलाहकार, कर अधिकारी, कंपनी सचिव, चार्टर्ड अकाउंटेंट, ऑडिटर, विज्ञापन सलाहकार, बाजार प्रबंधक, कर्मचारी प्रबंधन, विपणन प्रबंधक आदि अनेक विकल्प उपस्थित हैं। वाणिज्य की शिक्षा शिखरों के मध्य से निकलने वाला वह सूर्य है जिसकी अनंत किरणें हैं जो समाज को ऊर्जा का संचार करने का कार्य करते हैं।

श्री देवेश गजपाल सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)

महान व्यक्तित्व स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी सन 1863 को हुआ उनका घर का नाम नरेंद्र दत्त था उनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त पाश्चात्य सभ्यता में विश्वास रखते थे वह अपने पुत्र नरेंद्र को भी अंग्रेजी पढ़ा कर पाश्चात्य सभ्यता के ढंग पर ही चलाना चाहते थे विवेकानंद की बुद्धि बचपन से बड़ी तीव्र थी ।

सन 1893 में अमेरिका में विश्व धर्म परिषद हो रही थी स्वामी विवेकानंद जी के भाषण से सभी भाव विभोर हो गए स्वामी जी स्वामी जी उस धर्म परिषद में भारत के प्रतिनिधि के रूप में पहुंचे थे यूरोप अमेरिका के लोग उस समय पराधीन भारतवासियों को बहुत ही दृष्टि से देखते थे वहां लोगों ने बहुत प्रयत्न किया कि स्वामी विवेकानंद को सर्व धर्म परिषद में बोलने का समय ही ना मिले एक अमेरिकन प्रोफेसर के प्रयास से उन्होंने थोड़ा समय मिला किंतु उनके विचार सुनकर सभी विद्वान चकित हो गए फिर तो अमेरिका में उनका स्वागत हुआ वहां इनके भक्तों का एक बड़ा समुदाय हो गया वे 3 वर्ष तक अमेरिका में रहे और वहां के लोगों को भारतीय तत्वज्ञान की अद्भुत ज्योति प्रदान करते रहे ।

आध्यात्मिक विद्या और भारतीय दर्शन के बिना विश्वनाथ हो जाएगा यह स्वामी विवेकानंद जी का दृढ़ विश्वास था 4 जुलाई सन

1902 को उन्होंने देह त्याग दिया वे सदा अपने को गरीबों का सेवक समझते थे । भारत के गौरव को विश्व में उज्ज्वल करने का उन्हें सदा धन्यवाद ।

सुनील कुमार बीकॉम भाग एक

मां

मां जीवन के फूलों में खुशबू का वास है

मां पूजा की थाली है मंत्रों का जाप है

मां परमात्मा की स्वयं की गवाही है

मां त्याग मां तपस्या है मां सेवा है

मां का महत्व दुनिया में कम नहीं हो सकता है

और मां जैसा दुनिया में कुछ नहीं हो सकता है

कु सविता निषाद बीए भाग एक

खेलकूद विभाग

महाविद्यालय में खेलकूद विभाग द्वारा खेलकूद गतिविधियों को विस्तारित करने के लिए समस्त छात्र छात्राओं को प्रोत्साहित किया गया एवं इसी कार्यक्रम में हमारे महाविद्यालय के छात्र छात्राओं ने विभिन्न खेल विधाओं में अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिताओं में भाग लेकर शासकीय नागरिक कल्याण महाविद्यालय नंदिनी नगर अहिवारा का प्रतिनिधित्व किया एवं हमारे महाविद्यालय का नाम रोशन किया इस महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं में जो ऊर्जा है वो निश्चित रूप से महाविद्यालय का नाम रोशन करेंगे एवं छात्र छात्राओं के भविष्य को उज्ज्वल करेंगे।

निम्न छात्र छात्राओं ने सत्र 2021_ 22 में अपने उत्कृष्ट खेल से महाविद्यालय का नाम रोशन किया है ।

प्रशांत कुमार कनोजे, खेलकूद प्रभारी

महाविद्यालय की खेलकूद प्रतिभा

क्षमा साहू	खो-खो महिला	बीएससी भाग दो (गणित)
पवन कुमार	खो खो पुरुष	बीकॉम भाग दो
नीलम पटेल	एथलेटिक्स	बीएससी भाग एक (बायो)
सविता निषाद	एथलेटिक्स	बीए भाग एक

पुष्पांजलि पटेल	जूडो	बीएससी भाग तीन (बायो)
सुनील कुमार	एथलेटिक्स	बीकॉम भाग एक
गुलशन कुमार	क्रॉस कंट्री	बीए भाग एक
अमन कुमार	क्रिकेट	बीए भाग दो
ममता साहू	क्रिकेट महिला	बीकॉम भाग एक
कौशल कुमार	कबड्डी	बीकॉम भाग दो
गौरव कुमार (गणित)	शतरंज	बीएससी भाग तीन
तूरुचि ठाकुर	बैडमिंटन	बीएससी भाग तीन (बायो)

Thanks

